कहानी

मुआवजा

कुछ माह पूर्व तक विधायकजी के घर काम कर पेट पालने वाली विधवा रतिया उनकी दैहिक भूख की कई बार शिकार हुई थी। आखिर बेचारी करती क्या? कारण कि स्वर्गवासी पति के इलाज के लिए विधायकजी के पास गिरवी रखी खेती-बाड़ी, जेवर का कर्ज उतारना जो था। चीखती-चिल्लाती भी तो किसके सामने। गरीब की आवाज तो कीड़े-मकोड़ों के स्वर की तरह जहां उत्पन्न होती है, वहीं विलीन हो जाती है। बेचारी विधायकजी का खिलौना बन उनके इशारों पर लुटती-टूटती रही।

आज उनका पी.ए., रतिया के घर हाथ में रखे लिफाफे में कुछ लेकर आया था।

ले रतिया विधायकजी ने मुआवजा राशि भेजी है...।

काहे का मुआवजा?

अरी वही... अब तू बेरोजगार हो गयी... विधायकजी के घर काम पर नहीं जाती... तेरे हालात पर उन्हें तरस आया तो...। रखले पांच सौ रुपया है...।

पांच सौ रुपए में मेरी बेरोजगारी दूर हो जाएगी का...? मैं मजदूर हूं... मुझे काम की कोई कमी नहीं है... रख ले अपने रुपए...।

अरी इतनी क्यों बौखला रही है... यह चेक भी तेरे नाम... एक हजार का....।

ये काहे का है...।

अरी वही जो तूने...? इसे तो तू ही जान। समझदार है तू।

अच्छा... मुझे लूटने का... मेरे पेट में चार माह का बच्चा देने का...। मैं न करवाऊंगी गर्भपात। और सुन अपने विधायक से कह देना... इस बच्चे को जन्म देकर रहूंगी, ताकि पाप के हाथों ही पापी का अंत हो। मैं एक औरत हूं कोई कुतिया नहीं... औरत जब रणचण्डी बन जाती है, तब दानव का अंत कर चैन लेती है... थूकती हूं उसके ऐसे मुआवजे पर।

अरी रख ले... काहे को बैर लेती है...। उनके पास... ताकत है... तेरे पास....? सोच ले।

विधायक के जूठन खोर... तू भी उसकी बोली में बात कर रहा है। चल काला मुंह कर अपना- यहां से। वरना...।

रतिया का रौद्र रूप देख मुंह बिचकाते हुए बुदबुदाया- इस सती सावित्री को सबक....?

और वह लौट आया।

बात विधायकजी के कानों में बिजली की गति से पहुंची कि वह बच्चे को जन्म देने पर अड़ी है... लोक लाज को कपड़े की भांति उतार फैंका है उसने। इसका मतलब विपक्षियों को उनकी कुर्सी हिलाने का मौका... समाज में थू-थू... मीडिया को मसाला...। विधायकजी के कान खड़े हो गए। उनकी प्रतिष्ठा पर लगते ग्रहण से मुक्त होने का उपाय तो सोचना ही था। तुरंत अपने चमचे को बुलाया- सुन बे कालू... आज रात रतिया को उठा ले... और सुन डॉ. शीला को हिदायत देते हुए सब कुछ समझा देना...।

पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाकर चमचा चला गया।

आलीशान बंगले के एक कक्ष में कैद सुबकती रतिया का गर्भपात तो हो गया। एक सुबह अपने लग्गू-भग्गुओं के संग विधायकजी उसके पास पहुंचे।

सुन रतिया... अब तू जली हुई रस्सी रह गयी है काहे को इतना ऐंठी है... चुप, मत सुबक... अगर तू यूं रोएगी तो तेरा शरीर ही नाश होएगा... मेरा क्या जाएगा... ले पांच हजार रुपया... बस अपना मुंह बंद रखना।

रे राक्षस अभी भी तू मेरे जले पर नमक छिड़कने से बाज नहीं आ रहा है।

अरे नहीं... नहीं.... मैं तो मुआवजा दे रहा हूं... आखिर तूने मेरे पाप का अंत करने में... कितना रक्त बह गया तेरा... शरीर टूट गया न.... मान जा....

अगर यह कम पड़ते हों तो...।

'तू ऐसे बाज नहीं आएगा... तो तुम भी सुन लो रहस्य।'

'क्या रहस्य है जरा हम लोगों को भी सुना डाल।'

'यह मुआवजा अपनी बिटिया रिंकी को दे जो खुद कुंवारी मां बनने वाली है।'

क्या कहा कुतिया?

विधायकजी इतनी जल्दी...? बात तो सुन लो।

तुमने मेरे पेट का पाप तो साफ करा दिया... पर अपनी बिटिया के पेट में आपके विरोधी नेता बनवारीलाल के बेटे का छह माह का गर्भ नष्ट करा दो तो जानूं... जो ताकत मुझपे आजमाई अपनी बिटिया पर आजमा कर दिखाओ। उसके पेट का पाप चार आदमी के सामने उजागर नहीं कर सकते न...। और सुनो, यह सब मेरा किया धरा है... मैंने ही उन दोनों की मुलाकात में हाथ बंटाया था उस दिन जिस दिन तुमने मुझे पहली बार लूटा था.... मैं गली की कोई आवारा कुतिया नहीं थी, जो सब कुछ सह जाती... औरत हूं न... औरत बदला ऐसे ही लेती है...। और वह जोरों से खिलखिला पड़ी।

उसकी बातें सुनते-सुनते विधायकजी के गुस्से का पारा यूं तो चढ़ता ही जा रहा था पर उसके हंसने से उनके शरीर का रक्त संचार इतना बढ़ गया कि कांपते शरीर को उनके चमचे भी नहीं संभाल पाए और विधायक जी ने खरगोश पर बाज की भांति झपट्टा मारकर रतिया का गला दबा दिया। एक हल्कीचीख के साथ रतिया वहीं लुढ़क पड़ी। सब हक्के-बक्के लाश को ठिकाने लगाने में जुट गए। पसीने में तरबतर विधायकजी बिटिया के बारे में सोचकर न जी पा रहे थे, न मर पा रहे थे।

-सुनील कुमार 'सजल'

घाटे से उबरते हुए...

लघुकथा

उसने जिस व्यापार में भी हाथ डाला, उसी में घाटा उठाना पड़ा। घर की सारी जमा पूंजी भी व्यापार में गंवा दी। घर तक बिक गया। जिस किराए के मकान में रहा, रात के अंधेरे में वह मकान भी खाली करके भागना पड़ा, क्योंकि छः माह का बकाया किराया चुकाने की स्थिति नहीं थी।

अन्ततः पत्नी व बच्चों को गाँव के पुश्तैनी मकान में छोड़कर वह अज्ञातवास में चला गया। विचारमग्न था कि गृहस्थी का बोझ कैसे संभाले। निरंतर घाटे की स्थिति में निकट संबंधियों तक ने मुंह जो फेर लिया था।

व्यापारी दिमाग फिर ताना-बाना बुनने लगा। जेब खाली थी। बिना पैसे व्यापार की कल्पना भी संभव नहीं थी, फिर भी उसने अनेक योजनाएं बुनीं। इसी उधेड़बुन में रहा कि कोई ऐसा व्यापार किया जाये, जिसमें पूंजी का विनियोग न करना पड़े।

टेलीविजन पर उसने अनेक साधु-सन्तों का प्रवचन सुना, उनकी कार्यशैली को समझने का प्रयास करने लगा। सन्त-महात्मा वैराग्य का प्रवचन देते हैं, मगर इनकी कार्यप्रणाली में तो लेशमात्र भी वैराग्य नहीं है... लक्ष्मीजी की कृपा इन पर बरसती है, तभी तो आलीशान वातानुकूलित आश्रमों में निवास करते हैं। महंगी से महंगी कारों में घूमते हैं, इनके पीछे अनुयायियों की लम्बी कतार है। प्रवचन के समय पंडालों में पाँव रखने तक की जगह नहीं मिलती। तभी विचार कौंधा- क्यों न मैं भी ऐसा कोई जतन करूँ कि मेरे आगे-पीछे भी अनुयायियों की भरमार हो...।

नहीं... नहीं... ऐसा भला कैसे संभव है... मुझे तो आध्यात्म का तनिक सा भी ज्ञान नहीं है...। दूसरा विचार कौंधा।

मगर कुछ तो मुझे भी करना ही है... आखिर कब तक अपने आप से हारता रहूंगा... घाटे के व्यापार का दंश स्मरण करता रहूँगा? वह पुनः विचारमग्न हो गया।

कुछ समय के लिए उसने अपने सभी परिचितों से किनारा कर लिया। एक अन्तराल के उपरांत वह नए रूप में था। जनमानस की समस्याओं का समाधान करने वाले साधु के रूप में, जिसका समस्या-समाधान का ढंग भी निराला था और साधु-बाबाओं से बिल्कुल विलग। देखते ही देखते उसका नया व्यापार इतना व्यवस्थित होकर चला कि पुराने घाटे की भरपाई हो गई, साथ ही व्यापार में मुनाफा अन्य बाबाओं के मुकाबले सैकड़ों गुना अधिक था।

- डॉ. सुधाकर आशावादी

ओ पितर

छत्रछाया में जिनके बढ़े पले
बाहों में जिनके झूले, झूले।
आर्शीवचनों से जिनके फूले फले
वे हमें अकेला छोड़ चले।।
खोजती है आंखें इधर उधर
सुख स्वप्न जैसे हुये तितर बितर ओ पितर.....
आंचल से जिनको अमृत पिलाया,
गोद में जिनको थपक सुलाया
जीवन पथ पर चलना सिखाया
हृदय का सारा प्यार लुटाया।।
हाथ छुड़ाकर चल दिये ऐसे
मुट्ठी की रेत जैसे जाती बिखर ओ पितर....
तुम्हारा आव्हान कर्मकांड तर्पण
सब कुछ तुम्हारा तुमको ही अर्पण।
भर आती आंखें भारी है मन,
स्वीकार करो अर्ध्य, हे पितर देवजन।।
आशीष दो तुम्हारे अधूरे सपनों को दे हम नया शिखर ओ पितर....

- श्रीमती आशुसाठवाने अकिंचन
उ.ब. कांकेर

कविता

चन्दा मामा

चन्दा मामा चन्दा मामा अब तो तु आ जा रे
प्यारी सी निन्दिया चमक चान्दनी मेरी
नन्ही परी गुड़िया रानी को तु प्यारी सी
निन्दिया दिला रे।
चन्दा मामा चन्दा मामा अब तो तु आ जा रे।
चन्दा मामा छिप छिप बादल पीछे छुपते मुस्काये
प्यारी बिटिया रानी को मां आंचल पान कराये
प्यारे पापा अब तो देखो, तुझे बाहों का झूला झूलाये।
चन्दा मामा चन्दा मामा
जब तू रोये बिटिया रानी पूरे मोहल्ले में हल्लाम
जाये, तुझे मनाने दादा, दादी, नाना, नानी, चाचा, चाची
खुद बचे बन जाये, खेल खिलौने दोस्त बने
गुड्डे गुड़िया तीन पहियों वाली गाड़ी
चन्दा मामा चन्दा मामा
तबियत बिगड़े जब बिटिया मम्मी पापा और सभी
तेरी सेवा में लग जाये, जब तू किलकारी मारे,
और मुस्काये ये देखते ही सभी चेहरे खिल जाये।
चन्दा मामा चन्दा मामा अब तो तु आ जा रे।

- पवन कुमार
नियानार जगदलपुर

कैसे कैसे दान

व्यंग्य

हमारी संस्कृति में दान को मानव जाति का उच्चतम मानवीय गुण माना गया है। हमारा वांड्गमय हजारों लोक कथाओं तथा किंवदन्तियों का साक्षी है जो यह प्रमाणित करता है कि दान देने वालों को इहलोक तथा परलोक दोनों जगह श्रेष्ठ पद प्राप्त होता है।

हमारा इतिहास महाराज हरिश्चन्द्र, बलि, शिवि या कर्ण जैसे सैंकड़ों दानवीरों की गाथाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने दान से अपना सर्वस्व, यहां तक कि खुद को भी होम कर दिया।

आज वैसे दानी तो नहीं हैं लेकिन दान लेने और दान देने की परम्परा का इधर काफी विस्तार हुआ है। दान के बहुत से नये-नये रूप सामने आये हैं। अब विद्यादान को ही लीजिये। विद्या का दान सब दानों से बड़ा माना गया है क्योंकि

रूपया, पैसा, धन संपत्ति, ये सब तो क्षणिक हैं लेकिन शिक्षा जीवन पर्यन्त अक्षुण्ण रहती है। इसे देने वाला भी कभी घाटे में नहीं रहता क्योंकि एकमात्र यही धन ऐसा है जिसे जितना लुटाओ, उतना ही बढ़ता जाता है।

आजकल विद्यादान दो स्तरों पर दिया जाता है, एक सरकारी जहां विद्यादानियों को बिना विद्यादान किये ही उस का प्रतिफल मिलता है सो वे विद्यादान करने में विद्यालय में तो काफी कंजूसी से काम चलाते हैं लेकिन घर पर टयूशन दान करके उधर का एवरेज इधर पूरा कर देते हैं।

प्राइवेट स्तर पर विद्यादान की प्रथा बड़ी अनूठी एवं निराली है। इधर विद्यादान तो किया जाता है लेकिन इस दान के बदले में विद्यादान लेने वाले से भी काफी मोटा और तगड़ा दान लिया जाता है लेकिन दान की महिमा को कहीं ठेस न पहुंचे, इस लिहाज से दान को दान न कहकर डोनेशन कहा जाता है। दान की श्रेणी में तो यह वैसे भी नहीं आता क्योंकि दान स्वेच्छा से तथा निःस्वार्थ भावना से दिया जाता है लेकिन यह दान पेरेन्टस से अंग्रेजी चाबुक मार-मारकर वसूल किया जाता है। यह दान एक विवशता है बाध्यता है, इसी से इस दान को 'डोनेशन' के अंग्रेजी पैक में छिपाकर भारतीय संस्कृति की रक्षा की जा रही है।

दानों में कन्यादान का अपना अलग महत्त्व है लेकिन आज यह दान इतना महंगा साबित हो रहा है कि इसके नाम से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसका कारण कन्यादान के साथ उपदान के रूप में नकदी, जेवर, टी.वी., फ्रिज, गाड़ी वगैरह का जुड़ा होना है।

आज कन्या दान का सीधा अर्थ घर में डकैती पड़ जाना माना जाता है, सो इस दान से बचने का भी लोगों ने बड़ा सरल एवं सटीक उपाय खोज लिया है। इसके तहत कन्या भ्रूण की पहचान करके उसे गर्भ में ही समाप्त कर दिया जाता है। अब न रहेगी कन्या तो कन्यादान की मुसीबत भी कहां होगी? यहां भी दान की पवित्र भावना कलंकित न हो, इसलिये इसे 'दहेज' की संज्ञा दे दी गयी है। इस दान को भी दान इसीलिये नहीं माना जाता क्योंकि यह भी स्वेच्छा से कम और मजबूरी में ज्यादा दिया जाता है। दान सरकार भी करती है जैसे पहले राजा महाराजा किया करते थे। फिर यह तो व्यवस्था ही कल्याणकारी है मगर सरकार द्वारा दिये गये दान को भी दान न कहकर अनुदान कहा जाता है। अनु का अर्थ होता है पीछे। इस प्रकार इस दान के पीछे भी कुछ छिपा होता है। इस दान की एक और खासियत यह है कि यह उन लोगों तक तो काफी अल्प मात्र में पहुंचता है जो इसके असली हकदार हैं मगर इनका काफी बड़ा हिस्सा उन लोगों की जेब में चला जाता है जिन पर यह दान इसके पात्र लोगों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी होती है यानी दान के पीछे भी एक दान चिपका हुआ होता है। इन सब दानियों के अलावा देश का काफी बड़ा वर्ग मतदान करके हमारी दानशील परम्परा को महिमामंडित कर रहा है। यह दान वे लोग करते हैं जिनके पास अपना मत दान करने के अलावा दान लायक कुछ नहीं होता। वैसे इस तरह के दान की तारीफ तो काफी होती है लेकिन फिर भी कुछ कारण ऐसे बन रहे हैं कि दिनों दिन इस दान से लोगों का मोहभंग होता जा रहा है। आधे से कम दानी इस क्षेत्र में रह गये हैं। इस दान के एवज में वादा तो स्वर्ग का होता है मगर मिलता नर्क भी काफी घटिया श्रेणी का है। प्रत्यक्ष दानों के अलावा एक अत्यन्त गोपनीय दान भी होता है जिसे गुप्तदान कह सकते हैं। बड़े बड़े सेठ लोग राजनैतिक पार्टियों की झोली में इसी तरह का दान डालते हैं। इसके अलावा भी करोड़ों का अप्रत्यक्ष दान हमारे यहां रिश्वत, कमीशन, दलाली आदि के रूप में दिया और लिया जाता है लेकिन इसकी कहीं चर्चा नहीं होती क्योंकि दूसरी महिमा का बखान करके हम अपनी दान परम्परा को कलंकित नहीं कर सकते।

- प्रेमस्वरूप गंगवार

क्षणिका

रास्ता

राजनीति में भी लोग
नित नया
गुल खिलाते हैं
औरों को रास्ता बताते हैं
मगर
स्वयं उस रास्ते पर
नज़र नहीं आते हैं॥

- डॉ. सुधाकर आशावादी

पर्यावरण के प्राण पंचतत्वों पर आधारित महाकाव्य

ममोला

रचनाकार-शान्ती तिवारी, जगदलपुर

क्षिति

सित सुंदरता को क्यों त्यागा, है विज्ञान सद्य अधुनातन।
मानव मानव है श्रेष्ठ सुमन, क्यों सुलभ शस्य को छोड़ दिया।
सलज ममत्व प्रसून प्रसादक निज कर मानव ने तोड़ दिया।
पीड़ा नित अंतस बेध रही, करुणा कण कण है व्याप्त हृदय।
निज दुःखों का हेतुक सारा, तेरे सम्मुख है आज तनय।
जन का मुझ पर भार घटाने, तुम किंचित सा प्रयत्न करते।
आने वाला कल हो रक्षित, धरती अथच वन शेष रखते।
करके वन पल्लव नष्ट सकल, वध कर डाला अपनों का ही।
करे अशेष सकल नद नाले, संहार किया स्वजनो का ही।
पा पादप से पवमान पयद, क्षितिसुत पर कुछ उपकार किया।
तरु पर ही था सबका जीवन, जीवन का चिर अपकार किया।
मानव विहीन वसुधा पर भी, नग घनीभूत दर्शित होंगे।
क्षितिरुह समग्र हो गये अक्श, मानव न कहीं लक्षित होंगे।
निश्छल रक्षक का वध कर सुत, ममता वासन का हरण किया।
कर निहत अबोल बांधवों को, तुमने ममत्व को आंक दिया।
निःसृत निर्झर पीयूष गिरा, उच्छवसित हुई बानि कातर।
मनु मन आहत अपराधों से, उर अंतस आपूरित आदर।
मां, हम मानव के कर्मो ने, तुझको संताप दिया केवल।
करते मिल कंटक का सिंचन, बन सके न हम जननी संबल।
हूं अधम तनय पापाचारी, आश्रय चरणों में लेख रहा।
चहुं दिशि शार्वर से आच्छादित, रवि रश्मि चरण में देख रहा।
खग विहग नित्य अंबर छूते, तल तुझमें ही पाते नित्या।
कागर विहीन मैं रहा अपिच, अंतस में रोप रखा मिथ्या।
मैं मतिभ्रम में उड़ता अनत, था अंतरिक्ष में ठौर नहीं।
वह कौन सबल बाधक बनकर, मुझको लाता नित खींच यहीं।
उद्यम करता छूं लूं अंबर, मैं पंखी था विहीन पर का।
लाता पुहुमी पर पुनः पुनः, आकर्षण तब वत्सल कर का।
अध भटक रहा हो लक्ष्यहीन, आश्रय केतन अवशेष नहीं।
सकल शेष मां मनःकामना, मुझको विमुक्ति मिल जाय यहीं।
प्रायश्चित का मार्ग मुझे नव, तू ही दिखला सकती।
आपद अवमोचन के पथ की, सुयुक्ति समझा सकती।
सुत शरणागत तू आज हुआ, सह पाथक मैं तेरे पथ की।
परलै पूरित प्रतपन पथ पर, अथ याचक हूं पुष्पित अख की।
अपतत्वों के अपदूषण से, मुझमें न सुपोषण शेष रहा।
धन धान्य प्रसव की अभिलाषा, दूं तुझको वह सत नहीं रहा।
ले नवजीवन की नव वांछा, हो वारि देव के अभ्यागत।

क्रमशः